

इस अंक में...

- 7 सम्पादकीय
- 8 समसामयिकी घटना संग्रह
- 9 समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

18 आर्थिक घटना संग्रह

- जवाहरलाल नेहरू पोर्ट बना भारत का पहला 100 प्रतिशत लैंडलॉर्ड मॉडल वाला बंदरगाह
- एसबीआई द्वारा ह्याट्सएप बैंकिंग सेवा का शुभारम्भ
- मुम्बई, दिल्ली विदेशियों के लिए भारत के सबसे महँगे शहर

22 राष्ट्रीय घटना संग्रह

- द्रौपदी मुर्मू बनीं भारत की 15वीं राष्ट्रपति
- अरुणाचल प्रदेश और असम के बीच सीमा विवाद समझौता
- दिल्ली में बनेगा भारत का पहला ई-वेस्ट इको पार्क
- प्रधानमंत्री ने किया देवघर हवाई अड्डे का उद्घाटन

26 अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

- जर्मनी में 13वीं पीटर्सबर्ग जलवायु वार्ता सम्पन्न
- रानिल विक्रमसिंघे श्रीलंका के नए राष्ट्रपति चुने गए
- गूगल ने लॉन्च किया स्टार्टअप स्कूल इंडिया
- भारत की कुपोषित आबादी घटकर 224.3 मिलियन हुई

30 खेल खिलाड़ी

- 36वें राष्ट्रीय खेल 27 सितम्बर से गुजरात में शुरू होंगे
- रोहित शर्मा अन्तर्राष्ट्रीय टी-20 में लगातार सबसे ज्यादा मैच जीतने वाले कप्तान
- पी.वी. सिंधु ने जीता पहला सिंगापुर ओपन सुपर 500 खिताब

- 34 महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह
- 37 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न

लेख

- 40 कॅरियर लेख—सेनाओं में अग्निवीर भर्ती के लिए हो जाएँ तैयार
- 42 विधि लेख—न्यायपालिका एवं कॉलेजियम प्रणाली
- 43 संचार लेख—5जी प्रौद्योगिकी और डिजिटल समावेशन
- 45 जनसंख्या नियंत्रण लेख—दो बच्चों की नीति की आवश्यकता
- 46 प्रेरक लेख—कार्य की सफलता के लिए योजना, संकल्प और विधि
- 47 चिकित्सीय लेख—क्या डॉक्टरलिमैब है कैंसर की सटीक दवा ?
- 48 विधि लेख—समान नागरिक संहिता लागू करने का उचित समय
- 50 प्रौद्योगिकी लेख—रेल दुर्घटनाओं पर लगाम लगाएगा 'कवच'!
- 79 प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता
- 80 तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक-146 का परिणाम
- 82 रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

- 51 एस.एस.सी. काँस्टेबल (जीडी) परीक्षा, 2021

मॉडल हल

- 60 आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित आर.आर.बी. ऑफिस असिस्टेंट (बहुउद्देशीय) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
- 68 आगामी हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित सामान्य पात्रता परीक्षा (CET), 2022 हेतु विशेष हल प्रश्न
- 73 आगामी उत्तर प्रदेश प्रारम्भिक अर्हता परीक्षा (PET), 2022 हेतु विशेष हल प्रश्न

संस्थापक सम्पादक : स्व. श्री महेन्द्र जैन

सम्पादक : राहुल जैन

रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-2

ई-मेल : सम्पादकीय : publisher@pdgroup.in कस्टमर केयर : care@pdgroup.in

— सम्पादकीय ऑफिस : 1, स्टेट बैंक कॉलोनी, खन्दारी, आगरा-मथुरा बाईपास, आगरा-282 005

फोन-2531101, 2530966

— दिल्ली ऑफिस : 4845, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

फोन-011-23251844, 43259035

— पटना ऑफिस : पारस भवन (प्रथम तल), खजांची रोड, पटना-800 004

मो-09334137572

— हैदराबाद ऑफिस : 16-11-23/37, मूसारामबाग, टीगन गुडा, आर.टी.ए. ऑफिस के सामने मेन रोड, (यूनियन बैंक के बगल में), हैदराबाद-500 036 (तेलंगाना)

मो-09391487283

— हल्द्वानी ऑफिस : 8-310/1, ए. के. हाउस, हीरानगर, हल्द्वानी, जिला-नैनीताल-263 139 (उत्तराखण्ड)

मो-07060421008

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे-इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी 'सक्सेस मिरर' की नहीं है.

आप जो दे सकते हैं, वह देते क्यों नहीं हैं?



“चुनौतियों को स्वीकार करें, ताकि आप विजय के हर्ष का आनन्द महसूस कर सकें.”

—जनरल जॉर्ज एस. पैटोन्

हम शायद ही कभी यह सोचते हैं कि हम समाज के किस काम आ सकते हैं अथवा उपयोगिता एवं विकास की दृष्टि से हमारे भीतर कौनसी सम्भावनाएं विद्यमान हैं? यदि हम इस दिशा में प्रयत्न करेंगे, तो देखेंगे कि अपने में सुधार करके हम अपने लिए तथा अपने समाज के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। हममें से अधिकांश लोग ऐसे हैं जो अपनी सम्भावनाओं की खोज में न लगकर अपनी आवश्यकताओं एवं असफलताओं का रोना रोते रहते हैं। कभी हम भाग्य को दोष देते हैं और कभी परिस्थितियों की प्रतिकूलता को। हम भूल जाते हैं कि परिस्थितियाँ तो प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान होती हैं। जो सफल होते हैं, जो महान् बने हैं, उन्होंने इन्हीं परिस्थितियों में रहकर इन उपलब्धियों को प्राप्त किया है। वे सदैव प्रयत्नशील रहे थे कि वे समाज को क्या दे सकते हैं ?

निष्क्रिय एवं अकर्मण्य व्यक्तियों का एक वर्ग ऐसा भी होता है, जो मिथ्या गर्व के कारण हाथ-पैर हिलाने से भी परहेज करता है। कुछ लोग कुलीनता अथवा धनाढ्यता के कृत्रिम संस्कारों के वशीभूत होकर जड़वत् जीवन व्यतीत करते हैं। ऐसे लोग समाज को वह सब कुछ नहीं दे पाते हैं, जो वह दे सकते हैं। अपेक्षित केवल अपने भीतर झाँककर देखना है कि हमारी कौनसी सम्भावनाएं जाग्रत होने के लिए बेचैन हैं। अपनी बाहरी और भीतरी बेचैनी को दूर करने के लिए प्रत्येक जागरूक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने में सुधार के लिए प्रयत्नशील हो। समाज और राष्ट्र के सुधार का भी यही मार्ग है।

जो लोग आत्म-सुधार या आत्म-विकास की दिशा में प्रयासरत् होने के इच्छुक हैं, उनका प्रथम कर्तव्य यह है कि वे अपने को

हीन, असमर्थ या तुच्छ समझना छोड़ दें। उन्हें जीवन का यह सूत्र याद रखना चाहिए कि मैं सर्व समर्थ ब्रह्म का अंश हूँ तथा What man has done I can do जो कार्य किसी भी मनुष्य ने किया है, उसको मैं भी कर सकता हूँ। मैं भी तो उसी की तरह का आदमी हूँ, जिस प्रकार अनेक आकांक्षाओं के वशीभूत होकर भटकते रहना अनुचित है, उसी प्रकार हीनता के बोध के वशीभूत होकर अपने को अयोग्य मान लेना भी अनुचित है, अनुचित ही नहीं, बल्कि सर्व समर्थ प्रदायिनी शक्ति के प्रति कृतघ्नता है। इन वर्ग के व्यक्तियों के चिन्तन या सोच की पद्धति यह रहती है कि अन्य व्यक्ति मुझसे अधिक योग्य एवं समर्थ हैं। मुझे कौन पूछता है ? आदि, परन्तु वे यह क्यों नहीं सोचते हैं कि वह कौनसा रास्ता है जिस पर चल कर इन व्यक्तियों ने अपने को इस स्थिति में पहुँचाया है, मैं भी उसी प्रकार से अपना रास्ता बनाऊँगा और अपने को ऐसा बनाऊँगा, जो मेरी भी पूछ होने लगे। जब हम कदम बढ़ाते हुए संकोच करेंगे, तो सीढ़ियों के ऊपर क्योंकर पहुँच सकेंगे ? एक विचारक ने ठीक ही कहा है कि “वर्तमान की सोचनीय स्थिति से परत होकर धैर्य खो देने का अर्थ है स्वयं को पराजित मान लेना, ऐसी कोई परिस्थिति नहीं होती जिसे नियन्त्रित नहीं किया जा सकता हो। मात्र थोड़ी-सी सूझ-बूझ एवं लक्ष्य के प्रति लग्न की अपेक्षा होती है। मनोविज्ञान के ज्ञाताओं का कहना है कि जो व्यक्ति अपने को तुच्छ, अयोग्य या नगण्य मान बैठता है वह अन्ततः अपने को नापसन्द करने लगता है। साथ ही वह लोगों से भी घृणा करने लगता है जिनकी तुलना में वह अपने को हीन या तुच्छ मान लेता है। इस प्रकार अपनी ही दुर्भावना द्वारा व्यक्ति अपने लिए विषम एवं प्रतिकूल वातावरण का निर्माण कर लेता है।